त्रैमासिक मगही पत्रिका | अंक - 2, जून, २०२४

बताशा

मगही मिठास



बताशा पत्रिका में अपन रचना छपवावे ला भेजथीं
batasha.patrika@gmail.com

||श्री गणेशाय नमः ||

प्रधान संपादक

सत्य नारायण सिंह

संपादक मंडल

मधु कुमारी

ऋषीषेक

सम्राट लोकेश महतो

प्रथम पृष्ठ आकृति आऊ रचना

सत्य नारायण सिंह

सामग्री सूचि



संपादक के कलम से

प्यारे मित्र गण, नमस्कार । सबसे पहले तो मगही पत्रिका बताशा के पहिला अंक सब कोई हाथों हाथ लेलहु, ओकरा ला बहुत बहुत धन्यवाद । अपने सब के स्नेह के कारण ही आज एकर दूसर अंक, अपने के सामने हई।

जब भी हमनी मगही के बात करऽ हिययी, हमनी खाली एगो भाषा के न, अपितु पुरे एगो संस्कृति के बात करऽ हियई । जे अनंत काल से मगध में विराजमान रहले हे । बहु सा सडयंत्र झेलला पर भी आज जिन्दा हई, आउ आगे भी जिन्दा रहतइ, अइसन उम्मीद कइल जा सकले ह। हमनी मगहिया लोग मगही के कभी भी उतना महत्व न दे हियई, जेकर कारण से आज मगही प्रदेश में भी मगही दूसर नंबर पर आव हई, भाषा के गणना में। इ कोई हंसी आउ ठिठोली के विषय न हई। भारत के कोई अन्य भाषा अपना के सर्वप्रथम रखऽ हई, लेकिन हमनी मगही के दिन प्रति दिन पीछे ढकेलते जा रहली हे । एकरा में दोष आउ कोई के न, हमनी सब मगहियन के हई । एकर सउँसे जिम्मेवारी हमनी के उदासीनता के हई।

एहि उदासीनता के दूर करे के बीड़ा उठइलथिन हे कुछ युवक लोग जे सोसल मिडिया पर विख्यात हथीन । इ लड़कन एगो कठिन काम हाथ में लेलथिन हे , लेकिन संभव हई की इंकर प्रयास सफल हो जाये । इलोग सोशल मीडिया पर खास कर के एक्स (पहिले ट्विटर) पर मगही के अलख जगा रहलथिन हे । इ लोग के हम सब मगही परिवार के तरफ से साधुवाद दे हिययी। आशा करऽ हियाई कि एखनि हतास होले बगैर लगल रहथिन। अपने सब भी यथा संभव योगदान देथीन ।

बताशा पत्रिका ला अपन रचना भेजते रहथिन ।



बहुत बहुत धन्यवाद।

सत्य नारायण सिंह
(astra.satya1@gmail.com)

कविता

जीत निश्चित हइ

लालमणि विक्रांत

जे रहइ हइ
अडिग
डोले नञ डगमग
नाव जइसन
चलइत अन्हड़ में
ओकरे
जीत निश्चित हइ ।

दीप-सन जे
रह गेलइ
जोति लुटाबइत
विपद के बादल
सरंग में
घुमड़ के रहलइ
डेरावइत
तइयो
टस-से-मस
नञ डोलइ
ओकरे
जीत निश्चित हइ ।

छोड़ दे हइ
साथ सभे
कल तक
हलइ साथ जे
ओकर चिंता में
बिना डुबले
एसगर बढ़इ के

हिम्मत जुटाबइत
रहइ हइ जे कोय
ओकरे
जीत निश्चित हइ ।

गाछ-सन
जे जड़ जमइले
खींच धरती से
सरस जल
बाँट दे हइ
फुनगी तक के
अउर अपने
काट ले हइ
जइसे- तइसे
जिन्दगी के दिन
ओकरे
जीत निश्चित हइ ।

हम कहौं केकरा
सुनइ जे बात हम्मर
के रहल अइसन
इहे त सोंच के
हम लगल ही हटाबइत
राह में अप्पन
रोज रोड़ा के
बढ़इत ही
नाक के सोझा
कहइत हथ लोग
अइसने के
कि जीत निश्चित हइ ।

लेख

मगध आउ वसंत बहार

डॉ.राकेश कुमार सिन्हा “रवि”

बड़ी पुरान जमाना से मगध अप्पन लोक विचार,भाव संस्कार आउ सामाजिक सरोकार के नाम पर खूबे परसिद्ध रहलऽ हे।इ धरती में हरेक मउसम के अप्पन जादू हे, जेकरा में वसंत के बहार के जादू समूचे मगध में वसंती बयार कहल जाऽ हे।

जाड़ा, गरमी आउ बरसात नियन तीन मउसम तो सब जानऽ हथिन...बकि ऋतु छौ गो हे जेकर शुभ शुरुआत वसंत से होवऽ हे। एकर साथे-साथ गरमी, बरसात ,शरद ,हेमंत आउ शीत ऋतु के नाम आवऽ हे।बकि इ सब में जउन ऋतु हमनी के जीवन आउ परकिरति से अभिन्न रूप से जुड़ल हेऽ,ओकरा में वसंत पहला पयदान पर विराजमान हे।

अभी सगरो चारों दने जल ,जीवन, हरियाली के खूबऽ हवा हे,जेकर मजगर समय वसंत हे,जे एकरा जुग-जुगान्तर से समृद्ध बना रहल हे।एही से समूचा इलाका में वसंत के अप्पन मान हे।

चारों पट्टी सरसों के पियर पियर फूल, मंजर से लहलहायत आम के पेड़, गदराएल चना आउ मटर के साथे-साथ मंद-मंद बयार आउ भोर-भिनसरवा कोयल के कुक... वसंत के सहज सूचना दे जा हे।तब हमनी हरेक मगहिअन के मन में हिलोरा जोर मारे लगऽ हे

चारों पट्टी सरसों के पियर पियर फूल, मंजर से लहलहायत आम के पेड़, गदराएल चना आउ मटर के साथे-साथ मंद-मंद बयार आउ भोर-भिनसरवा कोयल के कुक... वसंत के सहज सूचना दे जा हे।तब हमनी हरेक मगहिअन के मन में हिलोरा जोर मारे लगऽ हे।इ वसंत के बहार के असर हे कि एकरा सभ्भे रितुअन में 'ऋतुराज' कहल जा हे। इ समय में मानव जीवे नऽ, हरेक चिड़ई-चुरगुन, पेड़- पौधा, लता-कुंज, बाग-बगीचा में भी नवजीवन, नया उत्साह के संचार होवे लगऽ हे।कष्टदाई मउसम से उबरे के बाद सब के मन मयूर खुशी से झूम जाऽ हे।

समूले देस नियन अप्पन मगध में भी वसंत के शुभ शुरुआत वसंत पंचमी से होवाऽ हे। मकर सक्रांति के बाद वसंत पंचमी हरेक अंग्रेजी साल के शुरुआती के सबसे बड़का परव अप्पन मगध में हे। इ नाम पर पूजा-पाठ, माई शारदा भवानी के आराधना तो होबे करऽ हे लेकिन मउसम बदलाव के चीज सबके भीतर से गुदगुदावे लगऽ हे। रसे- रसे आनंद,कहे के माने वसंत। मगध में वसंत पंचमी में बड़ी जगह मेला-महोत्सव के भी आयोजन होवऽ हे एकरा में उमगा, भूरहा, देवकुंड, गिरहण्डा, सरस्वती तीरथ,

मदसरवां,बराबर,ककोलत आई केतनन जगह के मेला तो दूर देस में भी खूब नाम कमा रहलक हे।

पुरान जमाना से मगध में प्रणय निवेदन के सबला उत्तम काल बसंत के मानल जा हे। एही मौसम में पेयार के डेगा -डेगी भाव रफ्तार पकड़े लगऽ हे। नया नोहर दुल्हनिया से लेके भरल गदराएल जवानी आउ प्रेम- मोहब्बत के नाम पर का जवान, का बूढ़ा... सब इ मउसम में हैरान रहऽ हथिन।

अपन मगही साहित में भी वसंत के खूब चरचा करल गेल हे। पंडित देवन मिसिर के वसंत के गुदगुदी के अप्पन मजा हे।पुरान जमाना से नया जमाना तक सभ्भे साहितकार, लेखक, चिंतक आउ गायक के पहिला विषय अगर कोई मउसम पर हे, तऽ उ वसंत हे-

लेऽ लऽजी! वसंत के माजा।वसंत सजलऽ जइसे राजा।।

नहला पर दहला मारइत कवि कौतुहल जी कहऽ हथिन कि-

तन वसंत आउ मन राजा।
धरती खुलके बजावे बाजा ॥

जब मन के राग तन समझे लगे आउ तन के अंगड़ाई मन में हिलोरा मारे लगे तब समझऽ कि वसंत आ गेल। पेयार -मनुहार, रास-रंग, उल्लास-उमंग के साथे-साथ धरती से लेकर गगन तक आउ गांव से लेके नगर तक वसंत सबके अप्पन अचरा में अइसन समेट ले हे कि सभ्भे के चेहरा पर मगध में वसंती के झलक निहारल जा सकऽ हे।

वसंत...कहे के माने दुःख भरल, कष्ट भरल आउ अनकुराह समय के अंतऽ। पुरान जमाना से अप्पन मगध में कहल जा हेऽ- अंत भला त सब भला। हिरदा के एही भलाई सबके गदगद कर दे हे।वसंत के शुरुआत में वसंत पंचमी आउ अंतिम होते-होते शिवरात्रि... एकर बाद फागुन के आहट। कहे के मानेऽ वसंत के बाद फागुन। तब्बे तो कोई-कोई कहऽ हथिन कि वसंत पर्यावरण के सोहगर कली हे तऽ फागुन एकर एगो विकसित फूल।

अपन मगध में एगो कहाउत हे-

अलट बैना पलट बैना,
बांझ घर के कइसन बैना।।

न्योता-पेहानी ,अंगया-बिजै के बड़ी मान अप्पन मगध में हे। हांऽ!तऽ वसंती के न्योता पर फागुन के आगमन होवऽ हे । कहे के मतलब अगर वसंत नऽ आएल तो फागुन के फिन बात कहां?

वसंत के बहार मगध में बनल- सजल रहे।एही लगी वसंती मजा लूटते रहऽ, बांटते रहऽ।जे हमनी के जिए के राह देखावऽ हेऽ, सिखावऽ हे आउ हौले-हौले मनमस्त रखे में जोगदान दे हे। बम-बम रहे वसंत।तब्बे तो वसंत के मजगर,लसगर आउ रसगर कहल गेलइ हे।

लेख

मगही अपन भाषा

नीरज गुप्ता “सुमन”

भारत के मगध प्रांत जे दूगो राज्य बिहार और झारखंड में स्थित है वहाँ के आंचलिय मातृभाषा मगही है ।

कोय भी प्रांत के अपन सांस्कृतिक पहचान बहुत सारा विषय से होवे है जेकरा में सबसे महत्वपूर्ण ओकर भाषा होवे है और ठीक उसी प्रकार से बिहार झारखंड के पहचान मगही भाषा से भी होवे है ।वैसे हमे कोय इतिहासकार या वैज्ञानिक या पुरातत्ववेत्ता (archeologist) तो नय हिये पर अपन बोध से ई कह सके हिये की मगही भाषा के पहचान मगध से ही है और एकर इतिहास महाभारत तक जा है ।

मगही भाषा के पहचान समाप्त हो रले और एकर दोष हमनी ही हिये । पिछला एक दशक से ई देखल जा रले की हम लोग हिंदुस्तानी और अंग्रेज़ी भाषा के रंग में अपने आप के घोलते जा रालिये ।

अब हम आवे हिये आजके विषय पे, जे अपन मगही भाषा के पहचान समाप्त हो रले और एकर दोष हमनी ही हिये । पिछला एक दशक से ई देखल जा रले की हम लोग हिंदुस्तानी और अंग्रेज़ी भाषा के रंग में अपने आप के घोलते जा रालिये । आजकल हमनी सब के अपन मातृभाषा में मगही में बात चीत करे में लाज लगे है ओर यही से कारण हमनी सब अपन आगे के पीढ़ी के अपन मातृभाषा के ज्ञान नय दे रलिये । एगो बंगाली दूसर बंगाली से बांग्ला में बात करे है ठीक उसी प्रकार से उड़िया लोग आसामी लोग मराठी लोग पंजाबी लोग मलयाली लोग अपन अपन लोग से अपन मातृभाषा में बात करे है चाहे ऊ देश में रहे या विदेश में पर हम बिहार झारखंड के मगध प्रांत के लोग के अपन मगही भाषा बोल में लाज लगे है । तो चला समझे के प्रयास करे हिये की ई कोन कारण है के हमनी सब अपने आप के मगही भाषा से दूर कर रलीये -
पहला कारण BOLLYWOOD - हा सहिये पड़ला, ई bollywood और मुंबई के चलचित्र उद्योग है जे सर्वदा से ही बिहार, बिहारी और बिहार के संस्कृति के व्यंग के रूप से प्रदर्शित

करलके जेकर कारण बिहार के लोग के मन में अपन पहचान के लेके बहुत ही हीन भावना रहे हैं ।
दूसरा कारण बोले से पहले ई बात जान लहो की अखंड बिहार भारत के पहला प्रांत हाले जे हिन्दी के सन् १८८१ में आधिकारिक दर्जा दलके और एकर बाद से हिन्दी भाषा के उन्नति में बिहारी लोग के योगदान अतुलनीय है जैसे की उदाहरण के लिए मैथिलिशन गुप्ता , रामधारी सिंह दिनकर , रामवृक्ष बेनीपुरी आदी , किंतु ई सब के बीच में अपन मगही साहित्य कही हरा गले ।
वैसे अईसन नय है कि मगही साहित्य के रचनाकार नय होलथिन या मगही साहित्य पूरा ख़ाली है विषय ई है कि ना सरकार और ना ही मगध प्रांत (बिहार झारखंड) के लोग मगही साहित्य के बढ़ावा दलखिन ।
तीसरा कारण है आजके समय में आधुनिकतावाद में अपने आप के रंग लेवे के जे होड़ लगल है - अपन बाल बुतरू के अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय (ईसाई विद्यालय) में पढ़ाना है , अपने आप modern दिखावे के चक्कर में अपन कुटुंब लोग से हिंदुस्तानी और अंग्रेज़ी भाषा में बोल चाल करना है , घर के कन्या लोग fashion में अपन बाल बुतरू के मम्मा बावा से मगही में बात नय करेले दते और नय सिखाईतै काहे की अपन बाल बुतरू के standard जे बनाना है, सरकारी विद्यालय एवम् private tuition में शिक्षक लोग छात्र लोग के मगही में बोले के लिए प्रेरित नय कर हथिन ।
मगही के पीछे होवे के बहुत बड़ा कारण में से आवा है राजनयतिक - बिहार और झारखंड में शुरू से ही राजनीति करेवाला नेता लोग कभी भी भाषण अपन मगही भाषा में नय दे हाखिन जबकि हिन्दी बिहार झारखंड के आधिकारिक भाषा है नाकी मातृभाषा , अब हमरा बहुत कोय ई भी बोल सके है कि हमे हिन्दी के विरोध कर रालिये पर ऐसन नय है , अरे हमनी के हरियाणा और राजस्थान के लोग से एक बात सीखे के चाही जे ऊ लोग के भी आधिकारिक भाषा हिन्दी है फिर भी ऊ लोग अपन मातृभाषा के सर्वदा से ही आगे बढ़ावा है । बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश जी पिछला १६ बरस से गद्दी पर बैठल हखिन किंतु उ कोय ऐसन पहल नय करलखिन जेकरा से बिहार के भाषा मगही ,मैथिली और भोजपुरी के शिक्षा के आधार से बढ़ावल जाय , अपन बिहार में उर्दू अरबी और फ़ारसी के लिए विश्वविद्यालय तो सरकार बना दलके किंतु अपन बिहार के भाषा के बढ़ावे के लिए प्राथमिक शिक्षा में भी मगही ,मैथिली और भोजपुरी नय है ।
वैसे लिखना तो बहुत कुछ है किंतु आज के लिए बस इतना ही ।
मगही भाषा के आगे आगे बढ़ावा काहे की तोहर पहचान मगध और मगही से हको ।

कार्टून

कार्टून के कोना

साभार : कीर्तीश आउ बी बी सी हिंदी



अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय, समाज के लिए वरदान या फिर एक श्राप

लेख

सुमन कुमार साव

पिछला शताब्दी के मध्य ९० के दशक से निम्न मध्य वर्ग के लोग में एक प्रचलन देखल जा रले और ई प्रचलन आज के समय में जैसे एक जीवन शैली कहीयो या फिर जीवन जिये एक fashion बनल हाऊ - तो बात दरासल ई है कि लोग अपन बाल बुतरू के बिना सोचले बुझले अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय विशेष करके ईसाई मिशनरी वाला अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय में पढ़ावा हखिन । पता नय लोगन सब के ऐसन कोची लगे है कि यदि ऊ अपन बाल बुतरू के ऐसन विद्यालय में १२ बरस पढ़ा के सीधा corporate में काम लग जैते या सरकारी क्षेत्र में नौकरी मिल जयतै ।

वैसे हमर ई वाला लेख आजके अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय के शिक्षा नीति के काला सच पर प्रकाश डाले वाला है और हमे इसलिए आत्मविश्वास के साथ बोल सके हिये काहे की हमे अपने जीवन के १० बरस अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय में पढ़ेलिए जेकरा में ५ बरस ईसाई विद्यालय में पढ़ेलिए और हमर २ छोटा भाई और १ छोटी बहन भी १२ बरस अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय में पढ़लके और ऊ भी कोलकाता नियन बड़ा महानगर में ।

पहला बात तो ई है कि माता पिता के लगे है कि ऐसन विद्यालय बच्चा लोग पड़ते तो पूरा अंग्रेज नियन अंग्रेज़ी बोलते ,

पहले तो आवे हिये की माता पिता अपन बच्चा लोग के ऐसन विद्यालय में की सोच के पढ़ावा हखिन -

पहला बात तो ई है कि माता पिता के लगे है कि ऐसन विद्यालय बच्चा लोग पड़ते तो पूरा अंग्रेज नियन अंग्रेज़ी बोलते , दूसरा ई की माता पिता सोचे हखिन की उनखर बच्चा यदि अंग्रेज़ी विद्यालय में जयतै तो सब विषय में पारंगत हो जयतै और सबसे बड़ा बात ऐसन विद्यालय में पढ़ाना शौक और आजकल के fashion में भी गिनल जा है ।

वैसे आगे बढ़े से पहले ई बात भी कहे हियो की कोय भी महँगा अंग्रेज़ी विद्यालय अच्छा होवे है ई जरुरी नय है और नय ही वहाँ के शिक्षक हर विद्यार्थी के ऊपर विशेष ध्यान दे पैथिन ।

अच्छा एक और बात विद्यालय तो होव है शिक्षा के मंदिर जहाँ पर ज्ञान अर्जित करल जा है पर आज के युग में विद्यालय तो केवल एक व्यवसाय करेके के एक दुकान बन के रह गले , जहाँ पर fees के नाम पर केवल माता पिता के परिश्रम के कमाई के लूटल जा है

और ऊ कैसे होवे है ई जीरी आगे देखा। विद्यालय के खिड़की , फूलदानी, केवाड़ी आदी टूट गले सीधा बच्चा लोग के fees पे जुर्माना लगा देवल जा है , विद्यालय के लिए २ प्रकार के uniform होवे है और हर कक्षा के लिए अलग अलग , uniform सही से नय पहन के आवे से जुर्माना , computer class के अलग से fees साल के तीन परीक्षा के लिए अलग से fees, साल में पर्यटक करावे के अलग से fees , आजकल तो christmas में जोकर सज के लिए अलग से fees और कितना लिखियो अपने सोच लहो ।

आज के समय में माता पिता के ई विचार करे के चाही की जितना खर्चा करके अपन बच्चा के अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय में पड़ा रलखिन उतना की उनखर बच्चा ज्ञान अर्जित कर पा रले की नय ??? उदाहरण के लिए एक १४ वर्षीय बच्चा के यदि ई प्रश्न पूछ लेवल जाय अपन बिहार राज्य के स्थापना कब होले हल या फिर भारत के अनुसूची में कितना भाषा के दर्जा मिलल है ? ई बात बोल सकललियो की ९० प्रतिशत बच्चा ए कर उत्तर नय दे पैते। वैसे अंग्रेजी केवल एक भाषा है और ओकरा केवल एक भाषा तक ही सीमित रखल जाय तो समाज और देश के लिए सही रहते , ई भाषा के नस में समावे के कोय दरकार नय है । वैसे विद्यालय के वस्त्र के बारे में कोची बोलिये अधिकांश अंग्रेज़ी विद्यालय विशेष करके ईसाई विद्यालय के लड़की विद्यार्थी के वस्त्र में shirt और skirt होवे है , और तू यदि गौर करभो तो बहुत सारा लड़की लोग के skirt जे है से आठवीं कक्षा के बाद mini skirt बन जा है - और विद्यालय के शिक्षक लोग के एकरा से कोय दिक्कत भी नय होवे है और बेचारा माता के लगे है कि यही विद्यालय के uniform है । तो एकरा से यही निष्कर्ष निकालल जा है कि लड़की लोग के छोटा कपड़ा पहने में ई सब अंग्रेज़ी ईसाई विद्यालय के भी प्रोतसाहन है जे भारतिया संस्कृति के परे है ।

अंत में हमे एगो बहुत ही महत्वपूर्ण बात बोलबो की अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय में ४००० से १५००० और अधिक मासिक दक्षिणा देवे के उपरांत भी अलग से private tuition में बच्चा लोग के पढ़ावे पड़े है जहाँ पर २००० से ५००० और अधिक दक्षिणा देवे पड़े है तो माता पिता के सोचना चाही की इतना फीस देवे के बाद भी यदि अलग से tuition पढ़ावे पड़ते तो अंग्रेज़ी विद्यालय में पढ़ा के ली लाभ होले ???? वैसे पढ़ाई के बहुत सारा content निःशुल्क इंटरनेट (youtube) पर उपलब्ध है ई बात भी ध्यान में रखा ।
वैसे लिखे के लिए तो और भी बहुत कुछ लिखना है पर कुछ तो तू अपने से समझ ला ।

जयतै जयतै एक बात कहवो
अपन भाषा
अपन अभिमान
अपन पहचान

राम राम

कविता

आज हमरा बिहार लिखना हई,

आनुवाद : सत्य नारायण सिंह | सौजन्य : इंटरनेट

आज हमरा बिहार लिखना हई,
हमरा मिथिला के मखान लिखना हई,
हमरा मगध के बखान लिखना हई,
हमरा भोजपुर के बलिदान लिखना हई,
हमरा अंग के परिधान लिखना हई।

आज हमरा बिहार लिखना हई,
हमरा पलायन के दंश लिखना हई,
हमरा इतिहास के अंश लिखना हई,
हमरा हिंदुस्तान के तंत्र लिखना हई,
हमरा मेहनत के मंत्र लिखना हई।

आज हमरा बिहार लिखना हई,
हमरा नदी सब के विनाश लिखना हई,
हमरा उम्मीद के प्रकाश लिखना हई,
हमरा त्योहार सब के उल्लास लिखना हई,
हमरा बदलाव के विश्वास लिखना हई।

आज हमरा बिहार लिखना हई।

वृतांत

जब दू मराठी दोस्त पहिला बेर अयलैय बिहार

भाग-१

प्रशांत कुमार

बात जादा दिन के नय हय। फागुन खतम होवे से पहिले एक रोज चमकिला शहर मुम्बई से एगो दोस्त (कोमल) फोन कैइलकै हल, हाल समाचार लेवे के बाद जब कोमल बोललके कि प्रशांत घुमै फिरे से जुड़ल एकठो राय लेवै लै तोहरा फोन करलियो हल। हम बोललियै कि बताव दोस्त कौन बात करेके है।पिछला कुछ बरस से हम इकोटुरिज्म के बढावा देवेलै एगो कंपनी शुरु कैइले हिय इ बात कोमल के मालुम हलै, खैर जे बात उ बतैलकै ओकरा से हमरा समझ मे अइलै कि मुम्बई महानगरी के जिंदगी से उ परेशान होकर दस बारह दिन के खातीर कहीं बाहर घुमै ले सोच रहलै हय और ओकर मन में हिमाचल के कसोल आव केरल के दृश्य घुम रहलै हय। हम जब कहलिये कि ई दुनि टो ठीके पसंद हव पर अगर अभी आ सकमी तो बिहार आ जो तो जैइसे ओकरा सांप सुँघ गेलौ, वैइसन चुप्पी महसूस कइलियौ। बिहार उ कहनौ नय अइलै हल और बहूत बात सुनने हलै।हमर दोस्ती के नाम पर फिर एक बार विचार करेके बात करके फोन काट देलकै हल। कुछ दिन बाद फिर हम याद दिलावे ले फोन कैइलिये कि कोमल काहें नय तु पहले बनारस आ जाहीं औव फिर गया आ जो। हम वहां से मगध के सबसे प्रसिद्ध बोधगया घुमा देवौ औव फिर हमनी राजगीर होते पटना चल जीवै तो ओकर मन में जैइसे बिहार के प्रति जिज्ञासा जगलै उ कन्फर्म कर देलकै।आ खुशी के खबर हलो हमरा ले और एगो जिम्मेदारी के भाव आ गेलौ हमरा पर कि सब अच्छे से करै पड़तै वोहे ले हम तैयारी शुरु करदेलियै।



हम जानकारी जुटैलियौ फिर जाके देखलियौ गया, बोधगया, राजगीर औव पटना मे रहे वाला दू गो दोस्त से बात कैलियो कि ऐसन बात हौ वहां भी सबकुछ नीमन से घुमावे के प्लानिंग करे पड़तै। बीच बीच में एक दूसरा से बात करतै रहलियै और मैप, जानकारी इ सब कोमल के भेजते रहलियै हल ताकि ओकरा पास ज्यादा से ज्यादा जानकारी रहे।

लेख

मगहिया और सोशल मीडिया

ऋषिषेक

हमनी के सब जानित ही की मगहिया सब हर क्षेत्र में आगे हय सिवाय एक दू क्षेत्र छोड़ के। उ में एगो विषय हय अप्पन भाषा अप्पन क्षेत्र ला आवाज़ उठाईला जेकरा में हमनी स बहुते पीछे ही।

अप्पन संस्कृति से लगाव त न के बराबर हो गइले हय। इ लगाव के बढ़ावे के एगो बहुते अच्छा माध्यम सोशल मीडिया हो सके हय।

अप्पन संस्कृति से लगाव त न के बराबर हो गइले हय। इ लगाव के बढ़ावे के एगो बहुते अच्छा माध्यम सोशल मीडिया हो सके हय।

और जेकर सबूत पिछला 1 2 साल में दिख गइले हय ट्विटर X फेसबुक इंस्टाग्राम पर मगहिया सब के एक्टिविटी काफ़ी बढ़ गइले हय काफ़ी जागरूकता अइले हय यूट्यूब पर भी काफ़ी कंटेंट देखे ला मिले लगलय।अब थोड़ा और जागरूकता बढ़ावे के जरुरत हय ताकि मगही भाषा के एक नया रफ़्तार देवल जा सके

साथ ही मगही विरोधीयन सब के उनकर ही भाषा में जवाब देवल जयते

अप्पन क्षेत्र पर दूसरे लोग के विस्तारवादी नज़र पड़ चुकले हय जेकरा के हमनी के डट के मुकाबला करे पड़तय। एकरा लागी एके उपाय है जितना सके हय उतना मगही के विस्तार करे ला।

इ काम मगहिया समाज के युवा से ही संभव ही आशा करित ही मगहियन सब इ सब में बढ़ चढ़ के हिस्सा लेथिन।

जय मगध जय मगही

कर्नाटक के इ आदिवासी महिला कैसे बन गेलथिन किसान सब के रोल मॉडल?

अनुवाद

आनुवाद : सत्य नारायण सिंह | सौजन्य : , बीबीसी हिंदी



अगर इ पढ़ल लिखल रहथिन हल त इ सोशल मीडिया पर जरूर रहथिन हल औ इनकर पहचान एगो 'इंफ्लुएंसर' यानी प्रभावित करेवाला एक व्यक्ति के रहते हल। लेकिन उनका पास कुछ अइसन कुशलता हई कि उनका कृषि और आदिवासी कल्याण के ब्रांड एंबैस्डर तो बनावल जा हीं सक्ले हे।

तेरह साल पहिले तक प्रेमा दासप्पा (50) जंगल में रहहलथिन आउ बहुत कम पैसा पर मज़दूरी कर हलथिन।

अब उ दूसर आदिवासी महिला सब के सिखा रहलथिन हें कि अपना आर्थिक सशक्तीकरण कैसे करल जाये(जादे पैसा कैसे कमावल जाये)।

मैसूर ज़िला के एचडी कोटा से बीबीसी से बतियियते घड़ी दासप्पा बतइलथिन पहले साल उ एक एकड़ जमीन पर चिया के बीज़ रोपलथीन हल जेकरा बेच के उ 90 हज़ार रुपया के कमाई कइलथिन हल। इ बिच्चा उ 18 हज़ार रूपइये क्विंटल बेचलथिन हल। इ कमाई से उ अपन बेटा के मोटरसाइकिल ख़रीद के देलथिन हल।

प्रेमा जेनू कुरुबा आदिवासी समुदाय के उ 60 आदिवासी परिवार में शामिल हलथिन जे साल 2007-08 में नागरहोल टाइगर रिज़र्व के जंगल से बाहर निकले के बदले तीन एकड़ भूमि के मुआवज़ा स्वीकार करलथिन हल।

जेकरा में से 15 परिवार अभी भी वन विभाग ला मज़दूरी कर हथीन जबकि पैंतालीस दूसर परिवार सब ज़मीन के इस्तेमाल सिर्फ़ रहेला कलथिन। केवल प्रेमा कुछ अलग करे ला सोचलथिन।



इ समझे ला कि इ ज़मीन के कैसे बढियाँ से इस्तेमाल में लआवल जाये, प्रेमा कईक जगह गेलथिन आउ उ अपन पति के साथ मिलके इहाँ खेतीबाड़ी शुरू कइलथिन। उ चावल, ज्वार, मक्का और सब्ज़ि उगैलथिन।

उनकर ज़िंदगी में बदलाव पिछले दशक के अंतिम साल में अइलइ।

प्रेमा बताव हथीन, हमनी अपन ज़मीन केरल के एक व्यक्ति के ठेका पर देली हल जे दरक के खेती करेला चाह हलइ। हमनी ओकरा से पैसा के बदले कुवां खोदावेला कहलियई ।

जौन इलाक़ा में आदिवासिय सब के ज़मीन देल गेले हल , वहां सिंचाई के कोई व्यवस्था न हलइ।

प्रेमा कह हथीन , "सभ बारिश पर निर्भर हलइ। इ ज़मीन इतना सुखल हई कि लोग यहां खेती करे के बजाए दूसर जगह जाके मज़दूरी करना पसंद कर हथीन। इहां खेती में लगावल लागत के भी नुकसान होवे के ख़तरा रह हई। "लेकिन प्रेमा के अलग नज़रिआ आउ सीखे के ललक उनका बहुत फ़ायदा पहुंचैलकइ ।

कर्नाटक सरकार के वन विभाग के साथ मिलके लोग के पुनर्वास के लिए काम करे वाली संस्था द वाइल्डलाइफ़ कंज़रवेशन सोसायटी (डब्ल्यूएलएस) भी उनकर क्षमता के पहचानालकै।

डब्ल्यूएलएस ला काम करेवाला गोविंदप्पा बीबीसी के बतइलथिन , "हमनी उनकर ज़मीन पर एक पॉली हाउस लगैलियै जहां उ हर तीन महीना में कई तरह के फलि, टमाटर, रागी और केला अगावा हथीन। हमनी खाली बीज दे हीयै आउ फ़सल किसान के होवा हई।

पॉली हाउस ग्रीन हाउस जैसन ही होव हई लेकिन इ पॉलीथीन के बनल रहा हई आउ एकरा में सूर्य के रोशनी किनारवा से भीतरी जा हई।

प्रेमा के सीखे के ललक आउ वन विभाग आउ डब्ल्यूएलएस के तरफ़ से देवल गेल मौका के फ़ायदा उठावे के कोशिश अब उनका बहुत फ़ायदा पहुँचलिके ह। अब उ सुपरफूड माने जायेवाला चिया बीज उगाव हथीन आउ ओकरा महंगा दाम में बेच हथीन।

उ हंसते हुए कह हथीन , हम दूसर किसानन के भी चिया उगावेला बीज बेच हिओ। अब हम आधा किलो बीज ढाई सौ रुपया में दे देही।



उ ख़ुश होके कह हथीन कि अब वन विभाग उनका दूसर जगह पर लेके जा हाई जहाँ उ किसानन के सलाह दे हथीन।

प्रेमा हर दूसरा -तीसरा महीना में औसतन 50-60 हज़ार रुपया कमा ले हथीन।

प्रेमा के दो बच्चा हई औ दुनु के शादी हो चुकले ह। उ गर्व के भाव से बतावा हथीन कि उनकर पोती एगो अंग्रेज़ी माध्यम स्कूल में पढ़ रहले ह।

दो दिन पहिले वन विभाग उनका से कृषि मेला के उद्घाटन करेला अपील कइलकइ . इ मेला के उद्घाटन मुख्यमंत्री बासवराज बोम्मई करेवाला हलथिन लेकिन मुख्यमंत्री उ दिन दिल्ली में हलथिन।

(आभार इमरान क़ुरैशी, बीबीसी हिंदी)

अपने सब भी अपन रचना भेजे में कोई कोताही नै कॅरियहो। झट पट लिख के हमरा पठा देहो।

ईमेल आइडी हको:

batasha.patrika@gmail.com





एकंगर मगही | Ekangar Magahi

@EkangarMagahi · 526 subscribers · 94 videos

नमस्कार, >

twitter.com/EkangarMagahi

Customize channel   Manage videos

For Magahi content visit:

https://www.youtube.com/@EkangarMagahi